नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305

इ-मेल: mgahvpro@gmail.com वेबसाइट : www.hindivishwa.org

हिंदी सीखने वाले विदेशी विद्यार्थियों के लिए पुस्तक प्रकाशित

दक्षिण कोरिया के बुसान और हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा का संयुक्त प्रयास

विश्वभर में हिंदी की पहुंच होगी आसान– डॉ. शमीम फ़ातमा

वर्धा, 19 मई 2017: हिंदी को विश्वभर में प्रचारित और प्रसारित करने के अपने प्रयास को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय ने और व्यापकता प्रदान करते हुए हिंदी सीखने वाले विदेशी विद्यार्थियों के लिए 'प्रैक्टिकल हिंदी कन्वर्सेशन' नाम से एक पुस्तक प्रकाशित की है। यह पुस्तक विश्व में हिंदी की पहुंच को आसान

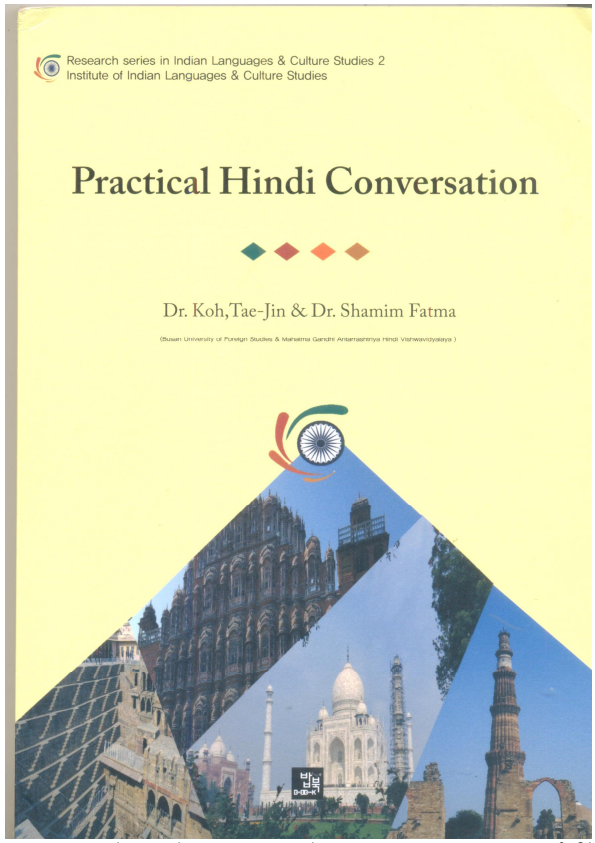

बनाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी ऐसा विश्वास महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में सूचना एवं भाषा अभियांत्रिकी केंद्रमें सहायक प्रोफेसर एवं लेखिका डॉ. शमीम फ़ातमा ने व्यक्त किया।

253 पृष्ठों की पुस्तक के बारे में उन्होंने बताया कि बुसान यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरिन स्टडीज, साउथ कोरिया और महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के संयुक्त प्रयास से इस पुस्तक को तैयार किया गया है। इस

पुस्तक में कुल 65 विषयों पर चर्चा की गयी है जिसमें आसान हिंदी शब्दों का चयन कर उसका अंग्रेजी अर्थ दिया गया है । इन विषयों में अध्यापक और विद्यार्थी का आपसी परिचय, मेल-मिलाप, सिनेमा से संबंधित वार्ता, दुकानदार से बातचीत, होटल में कमरा बुक कराना, विभिन्न भारतीय पर्यटन स्थलों के बारे में जानकारी, भारतीय पोशाक, भारतीय खेल, दिशाओं की जानकारी, भारतीय फिल्म और शिक्षा जैसे विषयों को परस्पर संवादों के माध्यम से आसानी से समझाया गया है । यह किताब प्रथम फेज में बनायी गयी है और इसे द्वितीय फेज में दृश्य और श्रव्य माध्यम में भी बनाने की योजना है ताकि विदेशी विद्यार्थी हिंदी को आसानी से ग्रहण कर सकें ।

बुसान विश्वविद्यालय, दक्षिण कोरिया के प्रो. ताय जिन कोह और डॉ. शमीम फ़ातमा ने इस पुस्तक को कड़ी मेहनत से बनाकर प्रस्तुत किया है । महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के सूचना एवं भाषा अभियांत्रिकी केंद्र के निदेशक एवं प्रोफेसर विजय कौल कुछ दिन पूर्व दक्षिण कोरिया स्थित सियोल के हंकुक यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज में आमंत्रित प्रोफेसर के रूप में गये थे और वहां पर इस पुस्तक को लेकर योजना बनी थी । इस पुस्तक को बनाने में विश्वविद्यालय के सूचना एवं भाषा अभियांत्रिकी विभाग के शोधार्थी धीरेंद्र यादव, राकेश रंजन, ऋषभ राय और विश्वनाथ सार्वे ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

पुस्तक के बारे में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय शब्द को चरितार्थ करने की दिशा में यह पुस्तक एक महत्वाकांक्षी पहल है । हाल ही के वर्षों में विदेशी विद्यार्थी हिंदी के प्रति आकर्षित हो रहे है और हिंदी विश्वविद्यालय में चीन, थाईलैंड, न्यूजीलैंड, रूस जैसे देशों के विद्यार्थी हिंदी की पढ़ाई में रूचि ले रहे है, उनके लिए यह पुस्तक लाभदायक साबित होगी । उन्होंने आश्वस्त किया कि इस पुस्तक का दृश्य-श्रव्य संस्करण जल्द ही हमारे सामने आएगा ।

डॉ. शमीम ने बताया कि इंस्टीटयूट ऑफ इंडियन लैग्वेजेज एण्ड कल्चरल स्टडीज, बुसान विश्वविद्यालय के विदेशी अध्ययन विभाग ने एक शोध परियोजना के अंतर्गत यह पुस्तक तैयार की गयी है । इसमें दैनंदिन जीवन में काम आने वाले शब्दों का प्रयोग किया गया है जिससे कोई भी विदेशी विद्यार्थी उसका अर्थ आसानी से समझ सके । विदेशों में हिंदी सीखने वालों की आवश्यकता को केंद्र में रखकर इसमें संवाद रखे गये है जिसे प्राकृतिक तौर पर उसे समझा जा सके । उन्होंने कहा कि इस योजना की अगली कड़ी में दृश्य और श्रव्य माध्यम को लेकर काम कर रहे है और इसे जल्द ही पूरा कर लिया जाएगा । विश्वविद्यालय के सहायक प्रोफेसर पीयूष प्रताप सिंह और डॉ. सोन सुंक्यंग ने भी पुस्तक को बनाने के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है।